Dr. Kumari Priyanka

History department

H.D Jain college, ara

Paper for B.A part 2,paper 3

Topic:–सिंध पर अरबों के आक्रमण का कारण

पश्चिमी भारत में सिंध एक शक्तिशाली राज्य था। सातवीं शताब्दी में ही संभवतः हर्षवर्द्धन ने सिंध पर आक्रमण किया था। ह्वेनसांग के अनुसार सातवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में यहाँ शूद्र जाति के एक बौद्धराजा ने अपना शासन स्थापित किया। चचनामा के अनुसार दाहिर के पूर्व सिंध पर रायवंश का अधिकार था। इसी वंश का राय साहसी द्वितीय हुआ; परंतु कुछ दिनों पश्चात उसके ब्राह्मण-मंत्री चच ने स्वयं ही राज्य पर अधिकार कर लिया। उसके पुत्र दाहिर के राज्यकाल में 712 ई० में अल-हज्जाज के आदेश पर मुहम्मद-बिन-कासिम ने सिंध पर आक्रमण कर इसपर विजय प्राप्त की। कतिपय राजपूत अभिलेखों, बिलादूरी की पुस्तक किताब-फुतूह-अल-बलिदान एवं फारसी-ग्रंथ चचनामा' से अरब-आक्रमण के विषय में जानकारी मिलती है।सिंध पर अरब-आक्रमण कोई आकस्मिक घटना नहीं थी, बल्कि इसकी पृष्ठभूमि बहुत पहले ही तैयार हो चुकी थी। भारत और अरबवालों में व्यापारिक संबंध बहुत पहले से, इस्लामधर्म के उदय के पूर्व ही, स्थापित हो चुके थे। अनेक अरब-व्यापारी भारत के पश्चिमी समुद्रतट पर स्थायी रूप से बस गए थे। इन्हें स्थानीय शासकों एवं जनता की सहानूभूति एवं समर्थन भी प्राप्त था। अरब-व्यापारियों को व्यापारिक सुविधाएँ भी प्राप्त थीं। वे थाना, देवल, खंभात, सोपारा और मालाबार के बंदरगाहों से व्यापार करते थे। छठी-सातवीं शताब्दी में इस्लामधर्म के उदय और इसके तीव्र प्रसार ने अरबों के दृष्टिकोण में भी परिवर्तन ला दिया। हजरत मुहम्मद के देहवसान (632 ई०) के एक शताब्दी के अंदर ही इस्लामधर्म का प्रसार यूरोप, अफ्रीका और एशिया के बड़े भू-भाग पर हो गया। अरबवासी भी इस्लाम के प्रचार में दिलचस्पी लेने लगे। भारत उस समय 'मूर्ति-पूजकों के देश' के रूप में विख्यात था। अतः, भारत में भी इस्लामधर्म का प्रचार एवं मूर्ति-पूजा को समाप्त करना अरबों का एक परम उत्तरदायित्व बन गया। यह कार्य बिना सैनिक शक्ति के संभव नहीं था । धार्मिक उद्देश्यों के अतिरिक्त भारत से धन प्राप्त करने की लालसा भी अरबों में थी। उस समय भारत का वैभव विख्यात था। मंदिरों में अकूत संपत्ति एकत्र थी । इन्हें लूटने से आर्थिक उद्देश्यों की पूर्ति के साथ-साथ धार्मिक उद्देश्यों की भी पूर्ति होती। एक बात और थी। सिंध में अपना राज्य स्थापित कर अरबों को भारत के भीतरी भाग में भी धर्मप्रचार का मौका मिलता। इसलिए, उन्होंने एक सोची-समझी योजना के तहत सिंध-विजय की योजना बनाई। सिंध की आंतरिक राजनीतिक एवं सामाजिक परिस्थितियों ने अरबों के हौसलों को और अधिक बढ़ाया।इन उद्देश्यों से प्रेरित होकर हजरत मुहम्मद के इंतकाल के कुछ वर्षों बाद ही खलीफा उमर के समय में (636 ई०), अरबों ने बंबई के निकट थाना पर आक्रमण किया तथा भड़ाँच और देवल तक धावा मारा; परंतु इसमें

उन्हें सफलता नहीं मिली। अरबों का दूसरा आक्रमण देवल के बंदरगाह पर हुआ। इसमें भी अरब विफल रहे। इस आक्रमण में अरब सेनापति मारा गया। इस पराजय ने कुछ समय के लिए अरबों के हौसले पस्त कर दिए। समुद्रमार्ग से विफल होकर अरबों ने अब स्थलमार्ग से सिंध की तरफ बढ़ने का प्रयास किया। खैबर-बोलन दरों से काबुल-जाबुल-राज्यों की सतर्कता तथा किक्कान के निवासियों के विरोध के कारण अरब आगे नहीं बढ़ सके। अब उनके समक्ष सिंधु पहुँचने का एकमात्र रास्ता मकरान था। अरब मकरान और सिस्तान पर अधिकार करने में सफल हुए और इसी मार्ग से उन्होंने सिंध पर विजय प्राप्त की।

अरबों के सिंध पर आक्रमण का तत्कालीन कारण देवल के निकट कुछ जहाजों का समुद्री डाकुओं द्वारा लूटा जाना था। कहा जाता है कि लंका का राजा जहाज द्वारा कुछ मुसलमान स्त्रियों को धन-संपत्ति के साथ इराक के गवर्नर हज्जाज के पास भेज रहा था। इस जहाज को समुद्री डाकुओं ने लूट लिया। हज्जाज इस घटना से बुरी तरह क्रुद्ध हो उठा। उसने सिंध के शासक दाहिर से क्षतिपूर्ति की माँग की; परंतु दाहिर ने यह कहकर हज्जाज की माँग ठुकरा दी कि समुद्री डाकुओं पर उसका कोई नियंत्रण नहीं था। दाहिर के इस उत्तर से हज्जाज अत्यंत क्क्रुद्ध हुआ। उसने खलीफा वालिद की अनुमति प्राप्त कर देवल पर आक्रमण की योजना बनाई। दोनों ही बार अरबों को पराजित होना पड़ा एवं इन अभियानों के नेता (उब्बैदुला और बुंदैल) भी युद्ध में मारे गए। क्रुद्ध होकर हज्जाज ने 712 ई० में अपने भतीजे और दामाद मुहम्मद-बिन-कासिम को पूरी तैयारी के साथ सिंध पर आक्रमण करने को भेजा। कासिम इस अभियान में सफल हुआ।